जल 'एक संकट'

डॉ० अनिता प्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
एम०एम०एच० कॉलेज, गाजियाबाद

कु० विक्टोरिया
शोध छात्र,
इतिहास विभाग,
एम०एम०एच० कॉलेज, गाजियाबाद
ईमेलः kmvictoriya012@gmail.com

सारांश

रहीमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न उपजे, मोती मानस चून।।

16वीं शताब्दी में लिखी गयी रहीम की ये पंक्तियाँ वर्तमान में कितनी प्रासंगिक है इसका अनुमान आधुनिक समय में उपजी जल संकट की स्थिति को समझकर लगाया जा सकता है। इन्ही पंक्तियों को यदि हम संत कबीर के दोहे के साथ समझने का प्रयास करे तो इसका अर्थ ओर भी व्यापक हो जाता है अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप अति का भला न बरसना अति की भली न धूप आज के साहित्य जगत में संत कबीर की ये पंक्तियाँ इतना साधारण और इतनी प्रासंगिक है कि इस दोहे की समानता उस दीपक के साथ स्थापित की जा सकती है जो सूर्य की अनुपस्थिति में सम्पूर्ण संसार को रोशन करने का दायित्व अपने नन्हे कन्धों पर उठाये सवेरे तक जलता है और संसार को सूर्य का उजियारा देकर ही विदा लेता है।

रहीम की पक्तियाँ जल की उपयोगिता एवं कबीर की पंक्तियाँ उसके संतुलित प्रयोग की ओर ध्यान आकृष्ट करती है कबीर जी का मत है कि चीजों के बीच सन्तुलन बनाए रखना अति आवश्यक है अन्यथा इसके परिणाम भयावह होगे और इस कथन की सिद्धि हम अपने आस पास घटित होती घटनाओं में देखते है जब आज हम सूखा व बाढ़ की समस्या से एक साथ ग्रसित है।

मुख्य शब्दः *जल, सूखा, बाढ़, संचार साध, मरूस्थलीकरण, बंजर, ऊर्जा संसाधन, घटता भू–जल स्तर।*

प्रस्तावना

'सूखाव बाढ़ एक साथ', कहने में बड़ा अटपटा सा लगता है लेकिन सत्यता यही है भारत में पिछले कई वर्षों में यही सब स्थितियाँ देखी जा रही है मार्च–अप्रैल माह में लोक पानी की कमी के कारण असत–व्यस्त है और मानसून आने पर लोग पानी की अति आपूर्ति के कारण व जल निकासी की उचित व्यवस्था न होने के कारण बाढ़ की समस्या से घिर जाते है। मानसून

से पूर्व केवल पानी की समस्या होती है लेकिन मानसून के बाद (बाढ़) पानी से बहुत सारी समस्याएँ आ जाती है जैसे, भोजन की कमी, पीने के पानी की कमी, रहने के लिए सूखा व स्वच्छ स्थान यातायात, बिजली व संचार साधनों का ठप हो जाना आदि साथ ही घरेलू सामान, अनाज, फर्नीचर, फसले व पशुधन आदि बाढ़ के कारण लगभग नष्ट हो जाते हैं बाढ़ व सूखे का यही उतार–चढाव 21वीं सदी की पहचान बनता जा रहा है।

ब्रहमाण्ड में पृथ्वी अद्वितीय ग्रह है क्योंकि यहीं पर जीवन की धड़कने सुनी जा सकती है पृथ्वी ही पर्यावरण का आधार है यहीं पर जीवन का सृजन होता है। प्राचीन ग्रन्थों जिन पंच महाभूतों का वर्णन मिलता है (भूमि, गगन, वायु, आग व नीर) जिन्हें सम्मलित रूप में भगवान कहा जाता है, में प्रथम तत्व पृथ्वी ही है जहाँ से प्रत्येक प्राणी अन्न प्राप्त करता है इसीलिए इसे विश्व भोजन कहा गया है।[1] ऋग्वेद से प्रारम्भ हुई पृथ्वी के लिए श्रद्धा की भावना की उच्चता अथर्ववेद में देखने को मिलती है जहाँ भूमि सूक्त में भूमि की आराधना माता भूमि पुत्रों अहं पृथ्विया कहकर की गयी है विष्णु स्मृति में पृथ्वी व अन्य तत्वों की उत्पत्ति विष्णु से ही मानी गयी है जो पृथ्वी के निर्माण में सहायक है कहा गया है कि पृथ्वी के सहायक तत्वों आकाश,[2] वायु[3], तेज[4], जल[5], आदि की उत्पत्ति के बाद पृथ्वी उत्पन्न हुई। अर्थात् पृथ्वी के अस्तित्व के लिए इन सभी तत्वों की अनिवार्यता है इनके बिना पृथ्वी पूर्ण नहीं है वह केवल मिट्टी का एक ढेर ही होगी। इन सभी तत्वों की परस्पर सहभागिता ही पृथ्वी को ब्रहमाण्ड में माँ का पद प्रदान करती है। अलग अलग होने पर इनका महत्व शून्य होगा। ये शक्तियाँ ही परस्पर मिलकर संसार की रचना करती है।[6]

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति व लिए सर्वप्रथम जिस तत्व की अनिवार्यता समझी जाती है वह जल ही है प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में जल को संसार की प्रतिष्ठा माना गया है आपो वा सर्वस्य जगतः प्रतिष्ठा।[7] भारतीय संस्कृति में जल व जल स्रोतों विशेष नदियाँ के प्रति विशेष श्रद्धा प्रकट की गयी है एव इन जल स्रोतों के रख–रखाव व उचित प्रबन्ध के भी दिशा निर्देश भारतीय ग्रन्थों में मिलते है ग्रन्थों में लिखित सामग्री प्राचीन भारतीय मनीषियों की जल संरक्षण व उसकी शुद्धता को बचाए रखने के प्रति जागृति को ही प्रदर्शित करती है वेदों में नदियों की तुलना माँ से की गयी है और प्रार्थना की गयी है कि नदियाँ एक अक्षय जल स्रोत के रूप में हमेशा बहती रहे[8] प्राणियों के लिए माताओं के समान कल्याणकारी[9] व अन्नदि उत्पन्न कर प्राणिमात्र को पोषण देने वाली है[10] जल की अनुपस्थिति में जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती इतिहास साक्षी है कि प्राचीन सभ्यताओं का उदय जल स्रोतों व नदियों के पास ही हुआ था। आधुनिक भुगोलवेत्ताओं का भी मानना थी यही है कि जीवन की उत्पत्ति सर्वप्रथम जल (जलीय जीव) में हुई। वेदों में भी आपौ व सर्वा देवता कहकर जल को प्राकृतिक तत्वों में सर्वप्रथम महत्व का बताया है इसलिए वर्तमान में जब किसी अन्य ग्रह पर जीवनोपयोगी परिस्थितियाँ खोजी जाती है तब वैज्ञानिक सर्वप्रथम वहाँ पानी की उपस्थिति के साक्ष्य खोजने का प्रयास करते है क्योंकि जल ही जीवन का वर्तमान और भविष्य है।

हमारी पृथ्वी का एक बहुत बड़ा भूभाग लगभग 2/3 भाग पानी से ढ़का है जो सागरों

व महासागरों के रूप में स्थित है यह सारा जल यदि मापा जाए तो मात्रा बहुत बड़ी होगी लगभग 1.460 पी टा टन (10^{21} किलोग्राम), परन्तु यह सारा जल खारा व लवणीय है और सामान्यतः बिना शोधन के प्रयोग में नही लाया जा सकता। लेकिन फिर भी कुछ देश समुद्री जल का शोधन कर उसे प्रयोग में ले रहे है शोधन पर हुए खर्च के कारण वहाँ के लोगों को पानी के बदले मोटी रकम चुकानी पड़ती है ऐसा इसलिए हो रहा है कि वहाँ पर अन्य जल संसाधन लगभग नष्ट हो चुके है। यह समुद्री खारा जल पृथ्वी पर उपलब्ध जल का लगभग 97% है। बाकी बचा 3% जल ही मनुष्यों के प्रयोग में लाया जा सकता है। लेकिन इसमें भी कुल जल का 2.4% हिमनदों व ध्रुविय बर्फ की चोटियों के रूप में है जो नदियों के माध्यम से समुन्द्र में मिल जाता है अपनी इसी यात्रा के दौरान प्राणियों के प्रयोग में आकर प्रदूषित भी होता है पिछली सदी में बढी ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियरों के पिघलने की दर बढी है अतः ग्लेशियरों का एक बड़ा भाग समुन्द्र में चला जाता है और इनकी उपयोगिता जल पूर्ति के रूप में समाप्त हो जाती है। साथ ही समुद्र के जल स्तर में वृद्धि के कारण तटीय क्षेत्रों में हालात सामान्य नही रह पाते।

बाकी बचा 0.6% जल जो झीलों तालाबों झरनो व भूमिगत जल के रूप में पाया जाता है, सामान्यत यही विश्व की जनसंख्या के दबाव को झेल रहा है। प्राचीन समय से ही प्राणी इसी जल पर निर्भर रहा है लेकिन वर्तमान में स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। अब नदियों तालाबों एवं झीलों का पानी व्यक्तियों की गतिविधियों के कारण दूषित होकर प्रयोग योग्य नही रहा, जिसका प्रभाव जीव जन्तुओं के जीवन पर अधिक पडा है क्योंकि जीवन पर पीने लायक साफ पानी उपलब्ध नहीं है एवं भूमिगत जल तक उनकी पहुंच नही है और यही भूमिगत जल वर्तमान में मनुष्यों की आवश्यकता पूर्ति का एक मात्र साधन बचा है, जिस कारण भूमिगत जल का घटता स्तर सभी के लिए समस्या का कारण बना है, सम्बरसिविल व इलेक्ट्रटिक मोटर पम्प के अधिक प्रचलन के फलस्वरूप भूमिगत जल का दोहन पहले के मुकाबले कई गुना बढा है जिसका प्रयोग मुख्य कृषि कार्यों में किया जाता है भारत में कृषि भूमि की लगभग 60% सिंचाई भूमिगत जल से ही की जाती है जिसका एक कारण पारम्परिक तरीको नहरों व तालाबों द्वारा होने वाली सिंचाई का घटना है। भूमिगत जल पर बढे दबाव का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि जहाँ भारत में प्रथम पंचवर्षीय योजना के समय नलकूपों की संख्या 3,000 थी वर्तमान में 57, लाख से भी अधिक हो गयी है कृषि क्षेत्र में वृद्धि के साथ ही भूमिगत जल पर दबाव भी बढा है।[11] जिस कारण जल स्तर घटा है व जल निकालने का खर्च बढा है। भारत में बिजली उत्पादन का 30.5% हिस्सा वर्तमान में भूमिगत जल को पंप करने में खर्च हो रहा है।[12]

यह सही है कि वर्षा के द्वारा भूमिगत जल का पुनः संचयन स्वम ही होता रहता है और इसी प्रकार ध्रुवो पर जमने वाली बर्फ व हिमनद भी स्वत ही निर्मित हो जाते हैं लेकिन केवल इतना सब होने से ही हम इस संकट के प्रति निश्चित नही हो सकते क्योंकि जनंसख्या का दबाव लगातार इस छोटे से जल संसाधन पर बढ़ रहा है।

इसी संकट की एक पूर्व सूचना हमे 1958 में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव वुत्स वुत्स घाली के कथन से भी मिल जाता है उन्होने कहा था कि ''मध्य पूर्व में अगला युद्ध पैट्रोल नहीं

बल्कि पानी के सवाल पर होगा।''[13] और इसी कथन का समर्थन कोफॉ अनान ने यह कहकर किया कि ''पानी के लेकर चल रही तीखी प्रतियोगिता भविष्य के युद्धों की जड़ बन सकती है''[14] संयुक्त राष्ट्र के अगले महा सचिव बान की मून भी इस विषय पर मौन न रह पाये और अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए जल संकट को भविष्य में युद्धों के ईधन की संज्ञा दी। विश्व में फैले जल संकट पर लोगां की प्रतिक्रियाओं का क्रम अभी नहीं रूका है। लोगों की चिन्ता बेवजह नही है जल की जीवन में महत्वपूर्णता किसी से छिपी नहीं है जल को जीवन माना जाता है और इसके बिना हम एक दिन के जीवन की भी कल्पना नहीं कर सकते। सृष्टि में कई तरह के प्राणी है, जो अपने भोजन के लिए अलग–अलग स्रोतों पर निर्भर है जैसे पैड़ पौधे सूर्य की रोशनी व मिट्टी के तत्वों पर शाकाहारी, पेड़ पौधो व वनस्पति पर व माशाहारी अन्य जीवों पर अतः Eating Food का दबाव कई अलग–अलग स्थानों पर है लेकिन इसके विपरीत Drinking Food के लिए सभी प्राणी केवल पानी पर ही निर्भर है साथ ही मनुष्यों की अन्य गतिविधियाँ जो उसे सभ्यता के मार्ग पर आगे ले जाती है। सभी जल पर ही निर्भर है वो फिर चाहे कृषि हो अथवा सभी प्रकार के उद्योग, कारखाने, व अन्य घरेलू जरूरते सभी जल से ही पूर्ण होती है।

पानी का सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग कृषि में है जो भोजन के उत्पादन का कारक है कुछ विकासशील देशों में तो कुल खपत का 90% केवल कृषि में ही प्रयोग होता है।[15] लेकिन कृषि के लिए उपलब्ध जल संसाधनों की लगातार कमी के कारण विश्व की लगभग 1/3 जमीन बंजर होने के कगार पर है जहाँ या तो उत्पादन होता ही नहीं है और यदि होता है तो नाम मात्र के लिए भारत में लगभग 30% भूभाग मरूस्थल में तब्दील होने की कगार पर है जिसका प्रभाव महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, जम्मूकश्मीर, कर्नाटक, झारखण्ड, ओडीसा, मध्यप्रदेश, तेलंगाना आदि राज्यों में देखने को मिलता है कुल बंजर भूमि का 82% भाग इन्ही राज्यों में है।[16] 2003–2005 से 2018–19 तक भारत में मरूस्थलीय क्षेत्र में 18 लाख हैक्टेयर की वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। जिसका प्रत्यक्ष परिणाम खाद्यान उत्पादन में आयी कमी में देखा जा सकता है हर वर्ष विश्व में अनाज उत्पादन में लगभग 20 मिलियन टन की कमी व मरूस्थलीकरण का 12 मिलियन हैक्टेयर भूमि पर प्रसार बढा है जिसके पीछे मुख्य उत्तरदायी कारण जल संसाधनों की घटती उपलब्धता है पिछले 50 वर्षों में कृषि में पानी की खपत में 100% की वृद्धि हुई है और यह अनुमान है कि 2050 तक इसमें 50% की वृद्धि होगी।[17] ये आंकडे विश्व पर मंडराते जल संकट व उससे उपजी केवल कृषि गत समस्याओं, अनाज, उत्पादन चारा उत्पादन एवं बढ़ते मरूस्थलीकरण के भयावह रूप को दर्शाते है जबकि जल संकट का एक रूद्र रूप पीने के पानी की किल्लत के रूप में भी मिलता है। जिसके फलस्वरूप दक्षिण अफ्रीका का कैपटाऊन शहर फरवरी 2018 में जीरो डे (0 Day) की स्थिति में पहुंच गया था। भारत में चेन्नई में भी स्थिति इससे कम भयावह नही थी। 2017 में चेन्नई पड़ने वाला सूखा पिछले 140 वर्षों के इतिहास में सबसे भयंकर रहा व चेन्नई नगर निगम कुल पानी की खपत का केवल 40% ही उपलब्ध करा पाया। क्योंकि वहाँ के जल स्रोत, कुछ नदियाँ (जो कि पूर्णतः शहरीकरण की चपेट में आ गयी) अब समाप्त हो चुकी है एवं बाकी में मानवीय गतिविधियों के कारण प्रदूषित पानी बह रहा है

झीले सूख चुकी है एवं भूमिगत जल स्तर लगातार घट रहा है जिस कारण पानी निकासी का खर्च बढ़ है व उसका सीधा प्रभाव ऊर्जा स्रोतों पर देखने को मिलता है वर्तमान में व्यक्ति की निर्भरता ऊर्जा स्रोतों पर बढ़ी है।

जल संकट की स्थिति 2019 तक चेन्नई में इतनी भयावह हो गयी कि वैल्लोर से चेन्नई के लिए 25 लाख लीटर पानी ट्रेन के द्वारा भेजना पडा। इसी तरह का पहला उदाहरण महाराष्ट्र के लातूर क्षेत्र का भी है जब सांगली से 5 लाख लीटर पानी लातूर को भेजा गया। यहाँ पानी को लेकर हिंसक गतिविधियाँ इस स्तर तक बढ गयी थी कि क्षेत्र में धारा 144 लगानी पडी। विष्व में वर्तमान स्थिति यह है कि बडे शहर पानी के टाइम बम पर बैठे है जो कभी भी फट सकता है। डाउन–टु अर्थ पत्रिका ने अपने विश्लेषण में बताया है कि दूनिया भर के 200 शहर 'जीरो डे' की ओर बढ रहे है और 2050 तक विश्व के 36% शहर पानी की गंभीर समस्या का सामना करेगे। भारत में दुनियाँ की 16% आबादी निवास करती है और कुल पीने के पानी का केवल 4% ही हमारे पास है।

जो निरन्तर घट रहा है उसमें भी उपलब्ध पानी का 70% प्रदूषित है हाल ही में नीति आयोग की रिपोर्ट बताती है कि हम प्रदूषित पानी वाले 122 देशों के सर्वे में 120वें स्थान पर है और 2020 तक देश के 21 शहरों में भूमिगत जल लगभग खत्म हो जायेगा जिससे लगभग 10 करोड़ लोग प्रभावित होगे, व 2030 तक तो भारत की 40% आबादी पानी से वंचित हो जायेगी।''[18] और देश की GDP में 6% की गिरावट का अनुमान है। क्या हम ऐसे एक दिन की भी कल्पना कर सकते है जब नल से एक बूंद भी पीने का पानी न आये यही स्थिति जीरो डे की होगी जिसकी तरफ हम बढ रहे है।

यह स्थिति केवल भारत की नही है विश्व भी इसी समस्या से जूझ रहा है ग्लोबल रिस्क रिपोर्ट बताती है कि आने वाले दशको में जल संकट सबसे बडा खतरा बनकर दुनिया पर मंडरायेगा और करीब 2/3 आबादी पीने के पानी की कमी का सामना करेगी। संयुक्त राष्ट्र के कथन ने भी इन सभी आंकडों पर सत्यता को मोहर लगा दी यह संस्था भी मानती है कि 2025 तक दुनियां भर के एक अरब अस्सी करोड लोगों को पानी की समस्या का सामना करना होगा।[19]

पिछले कुछ वर्षों में भारत के विभिन्न राज्यों को भयंकर सूखे का सामना करना पड़ा, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि पश्चिमी राज्यों में स्थिति इतनी खराब थी कि ग्रामीण आबादी एक बड़ा हिस्सा पीने के पानी के साथ साथ घरेलू कार्यों के लिए भी पानी से वंचित दिखा, अखबारों व न्यूज चैनलों द्वारा सैकडों की संख्या में इस विषय पर रिपोर्ट प्रकाशित की गयी यहाँ पर कृषि क्षेत्रों में आयी पानी की कमी के वर्णन की तो कल्पना भी तो नहीं कर सकते। जबकि पानी की पूर्ति घरेलू कार्यों के लिए भी नहीं हो पायी।

इस प्रकार गीष्म ऋतु में जल आपूर्ति ढ़प हो जाने पर धनी आबादी वाले क्षेत्रों में बोरिग पम्प का चलन बढ जाता है जो कि भू–जल के लिए एक नई समस्या पैदा करता है डाउन–टू–अर्थ पत्रिका द्वारा जारी अध्ययन रिपोर्ट में बताया गया है कि पिछले 30 वर्षों में केवल बेगलूरू में बोरिंग की सं0 5,000 से बढकर 4.5 लाख हो गयी है[20] और ऐसा नहीं है कि बोरिंग

केवल एक क्षेत्र में बढे है इसी अनुपात में बोरिगों की संख्या में वृद्धि पूरे भारत में हुई है जहाँ पहले केवल कृर्षि कार्यों के लिए इलेक्ट्रोनिंग पम्प प्रयोग होता था अब ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में घरेलू प्रयोग के लिए भी इन्ही पम्प का सहारा लिया जाता है। जो पानी के अति दोहन व बर्बादी को इंगित करता है।

केन्द्रीय जल आयोग की रिपोर्ट बताती है कि पश्चिम एवं दक्षिण के राज्यों में सतही जल स्तर में 10% से लेकर 85% तक की कमी मानूसन के पहले अप्रैल मई तक देखी गयी है। इन क्षेत्रों में झीले, जलाशय व बाँध लगभग 50% औसतन सूख चुके हैं। आन्ध्र प्रदेश में तो यह आंकडा 85% था।[21] ऐसी स्थिति में लोगों को भीषण गर्मी में जल की कमी के साथ मानसून का इंतिहार करना पडा वो भी 4–5 महीने तक/सामान्य दूर–दराज के क्षेत्रों में तो गरीब ग्रामीणों के जीवन की दौड धूप केवल पानी जुटाने तक ही सिमट कर रह जाती है लोगों को घरो से कई किलोमी0 दूर जाकर गहरे कुओ में रस्सी के सहारे उतरकर व छिल्लरो से पानी प्राप्त की कोशिश बहुत जोखिम भरी होती है इन कार्यों के अधिकतर छोटे बच्चे व बच्चियों को लगाया जाता है क्योंकि उनमें ऊर्जा का स्तर सामान्यतः अधिक होता है और वजन कम होने के कारण रस्सी के सहारे 40फिट गहरे कुए में उतना आसान होता है। इस तरह के जोखिम भरे कार्यों में दुर्घटनाए भी होती है एवं हिंसके घटनाएं भी।

पिछले दशक में हर वर्ष मार्च, अप्रैल से मानसून आने तक देष का एक बड़ा भूभाग लगभग 50–65% दक्षिण पश्चिम का क्षेत्र भयंकर सूखे का सामना करता है लगभग हर वर्ष भिन्न–भिन्न राज्यों के क्षेत्रों को सरकारें सूखा ग्रसित घोषित करती है और केवल कृषिगत राहत पैकेज जारी किये जाते है जो कि भ्रष्टाचारी व्यवस्था के कारण अंशतः ही किसानों तक पहुँच पाती है लेकिन यह तथ्य भी विचारणीय है कि सूखे व पानी की कमी के कारण केवल किसान ही नही बल्कि अन्य व्यक्ति, छोटे बच्चे, बुजुर्ग, पशु पक्षी, जानवर, आदि सभी जो कष्टों व दुर्घटनाओं के शिकार होते है। बच्चे जो 50–60 फिट गहरे कुएं में उतरकर जीवन से जंग करते है। स्कूली परीक्षाओं के समय में पानी की दौड़ धूप में जीवन के किमती समय को नष्ट कर देते है। अथवा वे जानवर जो जंगलों में पानी की कमी के कारण मर जाते है अथवा हिसंक हो जाते हैं।

इस वर्ष राजस्थान के कुछ जिलो में गर्मी में तापमान 50^C तक रिकार्ड किया गया व रात का तापमान 30^C रहा विज्ञान कहता है कि 50^C पर सामान्यतः कुत्ते पागल हो जाते है, व छोटे जीव व पक्षी मर जाते हैं। तो यह तथ्य विचारणीय है कि ग्लोबल वार्मिंग दिन–रात के तापमान में भारी उतार–चढाव सूखा कृर्षिगत व पीने के पानी की कमी अगर सभी इसी प्रकार चलता रहा तो जन सामान्य किस किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडेगा हम इसकी कल्पना भी नही कर सकते। ऐसी खबरे बहुतायत में सुनने को मिलती है जब जंगली हिंसक जानवर भोजन व पानी की तलाश में रियाइसी क्षेत्रों में घुस आते है व मनुष्यों द्वारा आत्मरक्षा में मारे भी जाते। इस प्रकार की घटनाएं उन सरकारी योजनाओं पर भी प्रश्न चिन्ह लगाती है जो जंगली जानवरों के संरक्षण के लिए चलायी जा रही है। पिछल कुछ वर्षों में इस प्रकार आत्मरक्षा

में मारे गये जंगली जानवरों की संख्या में वृद्धि हुई है साथ ही जन सामान्य भी इन जानवरों के हमलों के शिकार हुए एवं जान व माल की हानी लोगों की उठानी पडी। ऐसी घटनाओं के समय जानवरों व जन सामान्य दोनों के ही जीवन को बचाने की प्राथमिकता होती है लेकिन सामान्य जानवरों को ही अपनी जान गवाँनी पड़ती है।

जल संकट की भीष्णता यही खत्म नहीं होती। जल की एक त्रासदी इन सब समस्याओं से भी बडी है जिसे बाढ़ कहते है मार्च से मई तक जो क्षेत्र घोर सूखे की चपेट में रहते है वही मानसून के बाद बाढ़ का सामना भी करते है पिछले वर्षों के रिकार्ड पर नजर डाले तो पता चलता है कि दक्षिणी भारत व पश्चिमी भारत के साथ–साथ पूर्वी व उत्तरी भारत में भी बाढ़ व भू–स्खलन के कारण जन जीवन अस्त व्यस्त था, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडू पेथ्चेूरी, गुजरात, कर्नाटक, तेलगाना, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ ओडिशा आदि राज्यों को सूखे के साथ ही बाढ़ की त्रासदी भी झेलनी पड़ी, जिस कारण लगभग 70 लाख लोगों का जीन अस्त व्यस्त हुआ व लगभग 20,000 पशु भी मर गये।[22] बाढ का चेहरा सूखे से अधिक डरावना होता है क्योंकि सूखे में सहायता पहुंचाना आसान होता है और सामान्यतः पानी व अनाज की कमी होती है जबकि बाद के कारण लोगों को खाने व पानी के साथ ही रहने के लिए स्थान, कपडे, घरेलू सामान, दवाईयाँ, आदि चीजों की जरूरते होती है बाढ़ उतरने के बाद भी महिनों में जन जीवन सामान्य बन पाता है लेकिन बाढ़ के बाद जो समस्या सबसे बड़ी होती है वह है फैलती बिमारियाँ जो एक नई चुनौती लोगों के समक्ष पेश करती है साथ ही इमारते ढह जाती है। फसले बर्बाद हो जाती है रेल लाइने, पुल, सडके आदि को बहुत अधिक क्षति पहुँचती है साथ ही खाद्यान की कमी भी बढ़ने लगती है। सूखे के विपरित बाढ़ हमारे विकसित संस्थागत ढांचे को नकारात्मक रूप में प्रभावित करती है।

इस भयंकर संकट के कारणों पर नजर डाले तो हम पाते है कि हमारा त्वरित अतीत ही इसके लिए उत्तरदायी है बढ़ती ग्लोबल वार्मिग, बढ़ता प्रदूषण, घटते जल स्रोत, सिमटती नदियाँ, भूमि में फैला रासायनिक जहर, कम होते वृक्ष व वन क्षेत्र, सभी मानवीय गतिविधियों के ही परिणाम है इस पर भी सोने पे सुहागा हमारे सरकारी प्रयास व उत्तरदायी संस्थाएं। बाढ़ के कारणों में शहरीकरण एक बडा कारक है जिसे विकास का पर्याय माना जाता है। इन्ही शहरों पर बाढ का कहर सबसे पहले पडता है इन शहरों में सरकार हर वर्ष जल निकासी तन्त्र को मजबूत करने के लिए बडी बडी राशियाँ जारी करती है लेकिन परिणाम शून्य ही होता है ये शहर एक दिन की वर्षा भी सहने की स्थिति में नही होते और बन्द पड़े सीवरेज सिस्टम से पानी बाहर तो नही जा सकता परन्तु बाड शहरों में प्रवेश अवश्य कर जाती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इन समस्याओं के समाधान का दायित्व किसा है क्या सरकार अथवा जन सामान्य, अभी तक सब यही सोचते थे कि पर्यावरण में आया असन्तुलन दूर करने के लिए परस्पर सहभागिता की आवश्यकता है सम्पूर्ण समाज पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व को समझे। परन्तु अब समस्या इससे आगे बढ चली है अब केवल जन सामान्य स्वम के स्तर पर कोई प्रभावशाली परिणाम नहीं दे पायेगा अब तो राज्य सरकारों को ही कोई ठोस कदम उठाने

होगे जोकि अभी तक अपदा पर जन सामान्य की सहभागिता का बहाना बनाकर अपना पल्ला झाड़ लेती है।

ऐसे समय में जब पर्यावरण प्रदूषण विशेष जल प्रदूषण अथवा जल संकट की स्थिति इतनी भयावह है तब हमारा प्राचीन साहित्य हमारे सामने एक पथ प्रदर्शक का कार्य करता है अगर आधुनिक समस्याएं त्वरित अतीत की उपज है तो हम सुदूर अतीत से इनके समाधान का मार्ग भी पाते है हमारे ग्रन्थ मनुष्यों में कर्त्तव्य परायणता की भावना के प्रचार का प्रयास करते है वो फिर सामाजिक पर्यावरण के प्रति हो अथवा प्राकृतिक पर्यावरण इन ग्रन्थों से कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहा अतः हम वर्तमान में इनसे शिक्षा लेकर व बताए नियमों का पालन कर इन समस्याओं का समाधान टूट सकते हैं। वैदिक काल से आज तक इनकी प्रासंगिता कम नही हुई है। भले ही आज परिस्थितियाँ बदल गयी हो लेकिन समस्याओं का मूल तो वही है अतः हम उसके मूल को परिवर्तित कर सकते है एवं प्राचीन ग्रन्थों से प्राप्त ज्ञान का वर्तमान में प्रयोग कर लाभ प्राप्त कर सकते है व वर्तमान में उपजी जल संकट की समस्या का समाधान भी कर सकते है अपने पारम्परिक जल स्रोतों नदी, पोखरों, तालाबों झरनो आदि के पानी को भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखने का दायित्व केवल हम इंसानों का ही है क्योंकि पर्यावरण व प्रकृति हमारे पूर्वजों से प्राप्त धरोहर नही है यह वह ऋण है जो हमने अपने आने वाली पीढियों से लिया है और हमे इसे ब्याज सहित लौटाना है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. ऋग्वेद, 6.48.13
2. विष्णु पुराण–1.2.38
3. वहीं, 1.2.39
4. वहीं, 1.2.40
5. वहीं, 1.2.42
6. वहीं, 1.2.53
7. रातपत ब्राह्मण 6.8.2.2
8. अर्थववेद – 1.5.4–3
9. वही, 1.5.2
10. वही, 1.5.4
11. gaonconnection.com सिंचाई के आज और कल के तरीके ठेकुली से लेकर रेनगन तक विनित वाजपेयी
12. hindi.india watter portal.org –भूजल पर संकट
13. Prim time NDTV 20 JUN 2019–1958 का संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव का भाषण।
14. विकिपिडया–भारत में भूजल पर एक नजर–PRS LEGISLATINE RESEARCH

15. विकिपिडिया–सैन्टर फॉर साइंस एण्ड एनायरमेंन्ट CSC द्वारा जारी स्टेट एण्ड एन्वारमैन्ट फिगर–2019
16. राज्य सभा TV विशेष – मरूस्थल से जंग, 28 अगस्त 2019
17. नीति आयोग की रिपोर्ट 2018, केन्द्रीय भूजल आयोग
18. राज्य सभा टी0वी0 विषेश मरूस्थल से जंग–संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट
19. Navbhartimes.indiatimes.com विश्व जल दिवस : डे जीरों की ओर बढते कदम
20. नीति आयोग की रिपोर्ट 2018 स्थानीय समाचार पत्र दैनिक जागरण, अमर उजाला, जुलाई, सितम्बर तक व हिन्दी न्यूज आज तक